# आपकी जिज्ञासा

प्रिय पाठकों, प्रायः एक ही प्रकार की जिज्ञासाओं के समाधान आप पत्र एवं फोन, फैक्स, ईमेल द्वारा पूछते रहते हैं अतः कुछ प्रमुख जिज्ञासा जो सबसे अधिक आ रही है उनके समाधान नीचे स्पष्ट किये जा रहे हैं। यदि आपकी भी कोई जिज्ञासा हो तो आप पत्रिका कार्यालय को पत्र लिखे एवं पत्र के ऊपर ''जिज्ञासा'' अवश्य लिखें। सभी समाधान स्वयं परमपूज्य गुरुदेव श्री कमल श्रीमालीजी द्वारा दिये जाते हैं।

**जिज्ञासा-** गुरुजी, लक्ष्मी से संबंधित मंत्र, जप या अनुष्ठान करते समय किस प्रकार की माला का प्रयोग उचित है?

**समाधान-** कमल गट्टे की माला इस प्रकार के कार्यों के लिये सर्वाधिक उपयुक्त है। यदि ऐसी माला जीवन्त, चैतन्य, प्राण-प्रतिष्ठित एवं मंत्र सिद्ध हो तो निश्चित ही सफलता मिलती है।

**जिज्ञासा-** गुरुजी, दीपावली पूजन में लक्ष्मी के साथ गणेश की पूजा करें या विष्णु की?

**समाधान-** लक्ष्मी की पूजा किस तरह से हो, इसे लेकर अलग-अलग विद्वानों के अलग-अलग विचार हैं। सबसे ज्यादा मान्यता जिस विचार को प्राप्त है, वह यह है कि लक्ष्मी की पूजा गणेश के साथ की जानी चाहिए क्योंकि, वह विघ्नविनाशक हैं। दीपावली के दिन घर-घर में लक्ष्मी-गणेश की पूजा का प्रचलन है। लक्ष्मी के बारे में इस सर्वप्रचलित मान्यता पर कभी किसी ने पुनर्विचार की आवश्यकता नहीं समझी।

''श्रीलक्ष्मी नारायण साधना रहस्य'' -का निचोड़ यह है कि प्रचलित लक्ष्मी-गणेश आराधना जीवन में सुख और समृद्धि के लिए अवांछनीय तो नहीं है, किन्तु पूर्णतः उचित भी नहीं है। इसका कारण यह है कि ऐसा करके हम जाने-अनजाने लक्ष्मी को उनके प्राणेश्वर नारायण अर्थात् विष्णु भगवान से अलग करने का प्रयास करते हैं। विष्णु, लक्ष्मी के पति हैं, जबकि गणेश मानस पुत्र। पुत्र के साथ आह्वान् करने पर लक्ष्मीजी आराधक के पास आती तो अवश्य हैं, किन्तु थोड़े समय के लिए ही। जिस प्रकार मां अपने बेटे के पास आती है, उसे स्नेह प्रदान करती है, उसका लालन-पालन करती है और बड़ा होने पर उसे जीवन के संघर्ष के लिए आगे प्रेरित कर देती है, परन्तु उसका स्थायी संबंध तो अपने पति के साथ ही होता है। उसी प्रकार लक्ष्मीजी भी थोड़े-थोड़े समय के बाद, पुनः अपने आराध्य भगवान विष्णु के पास वापस लौट जाती है। इस प्रकार गणेश के साथ लक्ष्मी की पूजा से सुख संपत्ति आती तो है, किन्तु वह अस्थायी होती है। स्थायी सुख-समृद्धि के लिए तो लक्ष्मी की आराधना नारायण अर्थात् विष्णु के साथ ही करनी चाहिए।

**जिज्ञासा-** महानिशा मुहूर्त्त कौन सा होता हैं?

**समाधान-** महानिशा में तंत्र की साधना करने का विशेष महत्व है। इसी समय लक्ष्मीजी की आराधना करने से अक्षय धन-धान्य की प्राप्ति होती है। यह समय लक्ष्मी प्राप्ति की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। कहा गया है-

''अर्द्धरात्रात् परंयच्च मुहूर्त्तज्ञयमेव च।
सामहारात्रि रुटिटष्टा तऊतं चाक्षयं भवेत्।।

अर्थात् दीपावली की रात्रि को आधी रात्रि के पश्चात् जो दो मुहूर्त का समय है उसे महानिशा कहते हैं, उसमें आराधना करने से अक्षय लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

दीपावली के दिन सूर्य और चंद्रमा दोनों तुला राशि में होते हैं। तुला का स्वामी शुक्र है। शुक्र धन-धान्य प्रदान करने वाला ग्रह है, जैसा कि रुद्रयामल तंत्र में कहा गया है-''तदाधनार्थ पद्दाति शुक्र'' अर्थात् जब सूर्य और चंद्रमा तुला राशि के होते हैं, तब लक्ष्मीपूजन करने से धन-धान्य की प्राप्ति होती है।

**जिज्ञासा-** लक्ष्मी का वाहन उल्लू क्यों?

**समाधान-** श्री विष्णु भगवान की परमप्रिय लक्ष्मी जब अपने पतिदेव के साथ किसी के यहाँ जाती है तब वह विष्णु भगवान की गोद में गरुड़ पर सवार रहती है। परन्तु यदि कोई भगवान को छोड़कर अकेली का आवाहन करता है तब उसका वाहन भरे दिन में न देख सकने वाला विनाश का प्रतिनिधि उल्लू पक्षी होता है।

आप यह सब जानते है कि गरुड़ के दर्शन को सर्व साधारण समाज समस्त मंगल का मूल समझता है और उल्लू उजाड़ घर चाहने वाला मनहूस जानवर है।

अतः जिस व्यक्ति के यहाँ जप, पूजा-पाठ, ईश्वर आराधना, देव-पितृ कर्म, दान-पुण्य और अतिथि सत्कार होता है वहाँ समझें कि लक्ष्मी अपने पतिदेव श्रीमन्ननारायण सहित पधारी हैं। और जहाँ अनाचार, पापाचार, व्यभिचार, दुराचार, अत्याचार और प्रमाद का बोलबाला हो, देश-जाति-धर्म रक्षा के आवश्यक कार्यो को सामने देखते हुए आंख बंद कर ली जाती हो, शराब, कबाब, वेश्यागमन और मुकदमेबाजी में रुपये का अपव्यय किया जा रहा हो, वहाँ जान लेना चाहिये कि लक्ष्मीजी अकेले ही तशरीफ लाई हैं। तब ही तो श्रीमानजी कोरे काठ के उल्लू बने हुए हैं। वेद-शास्त्रों में नारायणगुना लक्ष्मी की प्रशंसा की है और एकाकिनी की निन्दा की है- रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्या पापीस्ता अनीनशम्।। (अथर्व. 7/115/4) अर्थात् पुण्या लक्ष्मी हमारे घर में रमण करे और जो अनर्थ मूल पापिनी है वह विनष्ट हो जाये।

**जिज्ञासा-** लक्ष्मी कैसे लोगों पर उपकार नहीं करती है?

**समाधान-** लक्ष्मी धन, ऐश्वर्य एवं सम्पदा प्रदान करने वाली देवी है। महापर्व दीपावली पर लक्ष्मी पूजन किया जाता है। श्रद्धालुगण उनके आगमन की प्रतीक्षा में रात भर जागते रहते हैं। वे दीपक की लौ बुझने नहीं देते क्योंकि लक्ष्मी को प्रकाश प्रिय है। लक्ष्मी भगवान विष्णु की पत्नी हैं और उनके चरणों पर लोटती है। यदि आप विष्णु जी को प्रसन्न कर सकने में समर्थ हैं तो लक्ष्मी स्वयं ही आपके पास खिंची चली आयेगी। विष्णु-पत्नी होने के बावजूद भी लक्ष्मी की स्वतंत्र सत्ता है।

लक्ष्मी स्वच्छता प्रिय है, आलस्य से घृणा है तथा वह अधिक निन्दाप्रिय लोगों से दूर भागती है। कहा भी गया है कि जिन व्यक्तियों के कपड़े और दांत गंदे रहते हैं जो कटु वाणी बोलते हैं, भोजन-अधिक खाते हैं तथा सूर्यास्त के बाद भी सोये रहते हैं, लक्ष्मी ऐसे लोगों को उपकृत नहीं करती, बल्कि उनका त्याग कर देती है। ऐसे लोगों के लिये लक्ष्मी के द्वार सदा बन्द रहते हैं। माता लक्ष्मी, रुकमणि से स्वयं कहती हैं कि मलिन, असावधान, अशांत, निर्लज्ज और कलह करने वाले लोगों का मैं सदा तिरस्कार करती हूँ। ♦♦♦